शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research

Half Yearly

Vol-3, Issue-2
15 Jul-2012

लक्ष्मीनारायण मिश्र के नाटकों के नारी पात्र एवं उनकी विशेषताएँ

– डॉ.देविन्द्रा कुमारी
*हिन्दी विभाग, राजेन्द्र प्रसाद (पी.जी.) कॉलेज, मीरगंज, बरेली (उ.प्र.)

www.shodh.net

Web Portal of Humanity & Social Science Research

लक्ष्मीनारायण मिश्र के नाटकों के नारी पात्र एवं उनकी विशेषताएँ

– डॉ.देविन्द्रा कुमारी झा*

हिन्दी साहित्य में नाटक लेखन की विधा काफी पहले से चली आ रही है। इसमें वर्णित पात्र समाज के विविध चरित्रों को उजागर करते है। प्रस्तुत शोध पत्र में नाटककार लक्ष्मी नारायण मिश्र के नाटकों में वर्णित समस्त नारी पात्रों व उनकी विशेषताओं का वर्णन किया गया है।

विषय संकेतः– नाटककार लक्ष्मीनारायण मिश्र, एकांकी, नारी पात्र

किसी भी नाटक में नारी पात्रों का होना स्वाभाविक है लक्ष्मीनारायण मिश्रजी अपने वैविध्य-पूर्ण सृष्टि के कारण नाट्य रचना में महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। मिश्र जी के समस्यामूलक सामाजिक ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, पौराणिक तथा जीवनीपरक नाटकों में लगभग सत्तर नारी पात्र हैं।

राज महिषी से लेकर दासी तक पति परायण से लेकर वेश्या तक, अपने व्यक्तित्व को पति में लय कर देने वाली नारी से लेकर पति का त्याग करके व्यक्तित्व का पोषण करने वाली नारी, वात्सल्यमयी जननी और रणक्षेत्र में पति के साथ युद्ध करने वाली रमणियाँ तक मिश्र जी के नाटकों में विद्यमान हैं। हत्या जैसे जघन्य अपराध करने वाली तथा निर्व्याज प्रेम लुटाने वाली नारियाँ भी उनके नाटकों में चित्रित हुई हैं।''[1]

पारिवारिक दृष्टि से माँ, हृदयेश्वरी, सहोदरा, दुहिता व पुत्रवधू जैसे प्रमुख रूप लक्ष्मीनारायण मिश्र जी के नाटकों में उपलब्ध है। कुछ नारी पात्र ऐसे हैं, जो नाटक में विभिन्न पारिवारिक भूमिकायें निभाते हैं।

काव्यशास्त्र के द्वारा निर्धारित नायिका भेद के आधार पर स्वकीया, परकीया और सामान्या, तीनों प्रकार की नायिकाएँ मिश्र जी के नाटकों मे मिलती हैं। अधिकांशतः नारी पात्र यथार्थ जीवन की समस्याओं का सामना, बुद्धिमानी, साहस और समझौतावादी दृष्टिकोण को अपना कर करते हैं। जयशंकर प्रसाद की नारियों की भाँति इनके नारी पात्र केवल आदर्श की उड़ान नहीं भरते वरन उच्चादर्श के साथ-साथ यथार्थ की भावभूमि पर चलते दिखाई देते हैं। उनमें नारी स्वभाव के गुण अवगुण विद्यमान हैं। प्राचीन नारियों के गुणों से ओत-प्रोत ऐसे नारी पात्र भी हम पाते हं, जो भारतीय परम्पराओं के अनुरूप जीवन व्यतीत करने में विश्वास रखते है।

लक्ष्मीनारायण मिश्र के नारी पात्रों का विभाजन बहिरंग और अन्तरंग वर्गीकरण के आधार पर किया जा सकता है। बहिरंग वर्गीकरण के अन्तर्गत नाट्य कथा के महत्व की दृष्टि से सामाजिक स्थिति की दृष्टि से एवं इतिहास क्रम की दृष्टि से नारी पात्रों की गणना की जा सकती है। अन्तरंग वर्गीकरण के अन्तर्गत व्यक्तित्व क्षमता, चारित्रिक वैशिष्ट्य तथा युग प्रभाव के आधार पर विवेच्य नारी पात्रों को वर्गीकृत किया जा सकता है।

प्रमुख तथा सजीव नारीपात्रः-नाटकों के पात्र पर कथानक आधारित होता है। नाटक के प्रमुख और सजीव पात्र कथानक को गति प्रदान करते हैं। इस वर्ग के अन्तर्गत ऐसे नारी पात्र होते हैं जो नाटक के कथानक एवं नाटककार के उद्देश्य में सक्रिय भूमिका निभाते हैं।

प्रमुख नारी पात्रों में मात्र नाटक की नायिका ही नहीं वरन् वे सभी जीवन्त पात्र आ जाते हैं जिनके बिना नाटक की कथावस्तु विखण्डित हो जाती है।

नाटक एवं उनके प्रमुख पात्र-१.अशोक- डायना, माया एवं देवी, २.संन्यासी- मालती, किरणमयी, ३. राक्षस का मंदिर- अश्करी, ललिता, ४.मुक्ति का रहस्य- आशादेवी, ५.राजयोग चम्पा, ६.सिन्दूर की होली- चन्द्रकला, मनोरमा, ७.आधीरात- मायावी, ८.गरूड़ध्वज- वासन्ती, मलयवती, ९.नारद की वीणा- चन्द्रभागा, मेनका, १०.वत्सराज- वासवदत्ता, पद्मावती, ११. दशाश्वमेध- कौमुदी, १२.वितस्ता की लहरें- रोहिणी, ताया, १३.चक्रव्यूह- द्रौपदी, उत्तरा, १४.कवि भारतेन्दु- माधवी, १५.वैशाली में बसन्त- रम्भा, अम्बपाली, १६. जगद्गुरू- भारती, १७.मृत्युन्जय- सरोजनी नायडू, १८.अपराजित- माधवी, गांधारी, १९.चित्रकूट- जानकी,

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research

Half Yearly

Vol-3, Issue-2
15 Jul-2012

लक्ष्मीनारायण मिश्र के नाटकों के नारी पात्र एवं उनकी विशेषताएँ

– डॉ.देविन्द्रा कुमारी
*हिन्दी विभाग, राजेन्द्र प्रसाद (पी.जी.) कॉलेज, मीरगंज, बरेली (उ.प्र.)

www.shodh.net

Web Portal of Humanity & Social Science Research

कैकेयी, २०.धरती का हृदय- मंजरी, अनुराधा, २१.गंगाद्वार- धरिणी, २२.सरयू की धार- प्रभावती, अरूणा, २३. कालविजय- सरस्वती, २४.अश्वमेघ- चित्रांगदा, उलूपी, चम्पकमाला, २५.कल्पतरू, २६.वीरशंख गौण पात्र:-लक्ष्मीनारायण मिश्र ने स्वरचित नाटकों में कथानक में सहायक गौण पात्र के विविध रूप चित्रित किया हैं। ये पात्र साधारण होते हुए भी नाटकों में अपना प्रभाव अवश्य रखतें हैं यद्यपि प्रमुख पात्रां की अपेक्षा ये कम प्रभावशाली है। गौण पात्रों के नाम निम्नलिखित हैं-

नाटक एवं उनके गौण पात्र-१.अशोक- विमला, २.राक्षस का मन्दिर- दुर्गावती, ३.गरुड़ध्वज- सौम्य दर्शना, कौमुदी, ४.वत्सराज- अंगारवती, ५.वितस्ता की लहरें- रजनी, तारा, ६.चक्रव्यूह- सुभद्रा, भानुमतो, ७. कवि भारतेन्दु- मल्लिका, ८.वैशाली में वसन्त- जयन्ती, ९.अपराजित- भानुमती, कृपी, १०.चित्रकूट- कौशल्या, सुमित्रा, माण्डवी, ११.धरती का हृदय - देवकी, हेममाला, १२.काल विजय- कंचना

सामान्य अथवा गौणतिगौण नारी पात्र:-लक्ष्मीनारायण मिश्र के नाटकों में प्रमुख तथा गौण पात्रों के अतिरिक्त कुछ ऐसे नारी पात्र भी है जो कथानक में उपकरण मात्र ही बनकर प्रयुक्त हुऐ हैं नाटकों में जो दासियाँ प्रतिहारियाँ परिचारिकायें या सखियों आदि को इस वर्ग में रखा गया है। इस प्रकार के नारी पात्र निम्नवत् हैं:-

नाटक पात्र-1-राक्षस का मंदिर-1सुखिया, 2-वत्सराज-1मदिरा 2कांचन माला, 3-दशाश्वमेध-1नन्दिनी, 4-वितस्ता की लहरें-1वसन्तसेना 5-चक्रव्यूह-1कादम्बिनी, 6-वैशाली में बसन्त-1केतकी 2मालती, 7-जगद्गुरू-1रेवती, 8-चित्रकूट-1मंथरा, 9-गंगाद्वार-1सुकेशी 2सुनयना, 10-अश्वमेध-1रजनी उपर्युक्त सामान्य नारी पात्रां के अतिरिक्त कतिपय ऐसे नारी पात्र भी हैं जिन्हें मिश्र जी ने कोई नाम नहीं दिया है।

लक्ष्मीनारायण मिश्र के नाटक एवं मातृत्व रूप में वर्णित नारी पात्र:-

१.अशोक नाटक-विमला, सौम्यदर्शना, २.गरूड़ध्वज -पद्मावती, ३.वत्सराज -अंगारवती, ४.चक्रव्यूह ५. सुभद्रा, जगद्गुरू ६.भारती, अपराजित ७.गांधारी, ८.चित्रकूट, ९.कौशल्या, १०.सुमित्रा, ११.कैकेयी, १२.धरती का हृदय, १३.देवकी, १४.कालविजय १५.सरस्वती, १६.अश्वमेध १७.चित्रांगदा आदि।

वनिता के रूप में चित्रित नारी पात्र:-देवी (अशोक), किरणमयी (संन्यासी), दुर्गावती (राक्षस का मंदिर), चम्पा (राजयोग), मायावती (आधीरात), मेनका (नारद की वीणा), वासवदत्ता (वत्सराज), 4रोहिणी (वितस्ता की लहरें), द्रौपदी, उत्तरा (चक्रव्यूह), रम्भा, जयन्ती (वैशाली में वसन्त), माधवी, कृपा, 5 भानुमती (अपराजित), जानकी, माण्डवी (चित्रकूट), अनुराधा, मंजरी (धरती का हृदय), कंचना (काल विजय), उलूपी व चम्पकमाला 6 (अश्वमेध) आदि।

दुहिता के रूप में चित्रित नारी पात्र:-डायना (अशोक), चन्द्रकला (सिन्दूर की होली), वासन्ती (गरूडध्वज), हेममाला (धरती का हृदय), धारिणी (गंगाद्वार), प्रभावती, (सरयू की धार) सहोदरा के रूप में चित्रित नारी पात्र:-माया (अशोक), 7कौमुदी (दशाश्वमेध), भाभी के रूप में चित्रित नारी पात्र:-पुत्र वधुएं:-उत्तरा (चक्रव्यूह), चम्पकमाला (अश्वमेध) प्रेमिकायें:- डायना (अशोक), मालती किरणमयी (संन्यासी), ललिता (राक्षस का मंदिर), मलयवती (गरूडध्वज), जानकी (चित्रकूट) चन्द्रभागा (नारद की वीणा), वासवदत्ता (वत्सराज), कौमुदी (दशाश्मेध), तारा, रजनी, ताया (वितस्ता की लहरें), माधवी (कवि भारतेन्दु), हेममाला, अनुराधा (धरती का हृदय)

दासियाँ:-सखियाँ (राक्षस का मंदिर), मदिरा, कांचनमाला (वत्सराज), नन्दिनी (दशाश्मेध), वसन्तसेना (वितस्ता की लहरें), कादम्बिनी (चक्रव्यूह), केतकी तथा मालती (वैशाली में वसन्त), रेवती (जगद्गुरु), मंथरा (चित्रकूट), रजनी (अश्वमेध) सखियाँ आली, सुकेशी व सुनयना (गंगाद्वार), अरुणा (सरयू की धार) बौद्धभिक्षुणी अम्बपाली (वैशाली में बसन्त)

इतिहास क्रम की दृष्टि से नश्वर जगत में सब कुछ परिवर्तनशील है। समय चक्र अविराम गति से घूमता रहता है। समय परिवर्तन के साथ ही समाज का स्वरूप व परिस्थितियाँ भी परिवर्तित होती रहती हैं। लक्ष्मीनारायण मिश्र जी के नाटकों में विभिन्न युग के नारी पात्र देखने को मिलते हैं। उन्होंने पौराणिक, ऐतिहासिक और आधुनिक युग पर आधारित नाट्य रचनायें की हैं। उनके नारी पात्र भी नाट्यकथा के अनुरूप ही

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research

Half Yearly

Vol-3, Issue-2
15 Jul-2012

लक्ष्मीनारायण मिश्र के नाटकों के नारी पात्र एवं उनकी विशेषताएँ

– डॉ.देविन्द्रा कुमारी
*हिन्दी विभाग, राजेन्द्र प्रसाद (पी.जी.) कॉलेज, मीरगंज, बरेली (उ.प्र.)

www.shodh.net

Web Portal of Humanity & Social Science Research

पौराणिक ऐतिहासिक और आधुनिक है। भारतीय नारी पात्रों के अतिरिक्त कुछ विदेशी नारी पात्रों को भी उनके नाटकों में स्थान मिला है।

इतिहास क्रम की दृष्टि से उनके नारी पात्रों को निम्न उपवर्गों में बांटा गया है:-

१-पौराणिक नारीपात्र:-

इस युग में वे नारीपात्र हैं जो पुराण युग की कथाओं से सम्बन्धित हैं। लक्ष्मीनारायण मिश्र जी द्वारा वे कल्पित नारी पात्र जिनका चरित्र विकास पौराणिक कथानक में किया गया है ये पात्र निम्नवत् हैं:-

चन्द्रभागा व मेनका (नारद की वीणा), द्रौपदी, सुभद्रा, उत्तरा व भानुमती (चक्रव्यूह), माधवी, गांधारी, कृपी व भानुमती (अपराजित), जानकी, कौशल्या, सुमित्रा, कैकेयी माण्डवी व मंथरा (चित्रकूट), चित्रांगदा, उलूपी व चम्पकमाला (अश्वमेध), आदि।

ऐतिहासिक नारी पात्र:-इस उपवर्ग में एतिहासिक कथानकों के वे नारी पात्र सम्मिलित किये गये हैं जिनमें से कुछ पात्र तो ऐतिहासिक है और कुछ लक्ष्मीनारायण मिश्र जी की कल्पना की सृष्टि हैं। लक्ष्मीनारायण मिश्र जी के जीवनीपरक नाटकों के नारी पात्र भी इसी उपवर्ग में रखें गये हैं, क्योंकि उनके तीनों जीवनीपरक नाटक ''जगद्गुरू'', ''मृत्युन्जय'' और ''कवि भारतेन्दु'' इतिहासके पृष्ठों में स्थान पाने वाले महापुरुषों की जीवनी पर आधारित है। आदि गुरु शंकराचार्य, महात्मा गाँधी और भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ऐतिहासिक सन्दर्भो में महान व्यक्तित्व हैं।

ऐतिहासिक नारी पात्रों क नाम इस प्रकार हैं:-देवी, माया, विमला (अशोक), बासन्ती, मलयवती, सौम्यदर्शना, कौमुदी (गरूड़ध्वज), वासवदत्ता, पद्मावती, अंगारवती (वत्सराज), रोहिणी, तारा, रजनी, ताया (वितस्ता की लहरें), माधवी, मल्लिका (कवि भारतेन्दु) रम्भा, अम्बपाली, जयन्ती (वैशाली में वसन्त), कौमुदी (दशाश्वमेध), भारती (जगद्गुरू), सरोजनी नायडू (मृत्युंजय), अनुराधा, देवकी, मंजरी (धरती का हृदय), धारिणी (गंगाद्वार), प्रभावती, अरूणा) (सरयू की धार), सरस्वती व कंचन (काल-विजय)

आधुनिक नारी-पात्र:-इस उपवर्ग में लक्ष्मीनारायण जी के सामाजिक समस्यामूलक नाटकों के नारी - पात्र अधिक सजीव और जीवन्त हैं:- यथा, 'मालती', 'किरणमयी' (संन्यासी), 'ललिता', 'अश्करी', 'दुर्गावती' (राक्षस का मन्दिर),'आशादेवी' (मुक्ति का रहस्य), 'चन्द्रकला', 'मनोरमा' (सिन्दूर की होली), 'चम्पा' (राजयोग),'मायावती', (आधीरात) आदि।

विदेशी नारी पात्र:-''डायना'' (अशोक),''ताया'' (वितस्ता की लहरें),''हेलेन'' (''धरती का हृदय''), आदि विदेशी नारी पात्र हैं।

उदात्त नारी-पात्र:-जो नारी पात्र कर्त्तव्यपरायण, पतिपरायणता, अपूर्व साहसिनी, तेजस्वी, त्यागमयी जैसी उदात्त भावनाओं से ओत-प्रोत हैं:- यथा, 'माया' (अशोक), 'मलयवती (गरूड़ध्वज), 'मेनका' (नारद की वीणा), 'वासवदत्ता' (वत्सराज),'कौमुदी' (दशाश्वमेध), 'रोहिणी' (वितस्ता की लहरें), 'उत्तरा' (चक्रव्यूह), 'रम्भा' (वैशाली में बसन्त), 'भारती' (जगद्गुरू), 'माधवी','गांधारी' (अपराजित), 'जानकी' (चित्रकूट),'सरस्वती' (काल-विजय), 'चम्पकमाला' व 'उलूपी' (अश्वमेध) उपर्युक्त पात्रों में अति विशिष्ट गुणों का समावेश हुआ है।

'लक्ष्मीनारायण मिश्र' जी के ऐतिहासिक, सांस्कृतिक तथा पौराणिक नाटकों के नारी पात्रों की विशेषताएँ निम्नवत् हैं:-

1-असाधारण नारी पात्र:-''वैशाली में बसन्त'':-इस नाटक की नायिका रम्भा तक्षशिला के आचार्य पुष्कल के भ्राता देवदत्त की कन्या है। वह रोहित की प्रेमिका और परिणीता है। प्रेम, दया, सौन्दर्य, शील और साहस के समन्वय ने इसे असाधारण नारीत्व के रूप में परिवर्तित कर दिया है। अश्वारोहण, शस्त्र-संचालन और धनुर्वेद की विद्या में भी वह पारंगत है। रोहित का विवाह गान्धार के रीति-रिवाजों से हुआ था। नारी के सबला स्वरूप में उसका विश्वास है। उसका विचार है कि नारी को युद्ध में पारंगत होना चाहिए, जिससे आवश्यकता पड़ने पर वह अपने प्राणेश की सहायिका बन सके। स्पष्टवादिता, उदारता, वीरता, बुद्धिमत्ता और निश्छलता का अद्भुत संयोग उसके व्यक्तित्व में है। उसकी असाधारण शक्ति का परिचय तब मिलता है, जब वह गर्भावस्था में भी

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research

Half Yearly

Vol-3, Issue-2
15 Jul-2012

लक्ष्मीनारायण मिश्र के नाटकों के नारी पात्र एवं उनकी विशेषताएँ

– डॉ.देविन्द्रा कुमारी
*हिन्दी विभाग, राजेन्द्र प्रसाद (पी.जी.) कॉलेज, मीरगंज, बरेली (उ.प्र.)

www.shodh.net

Web Portal of Humanity & Social Science Research

अजातशत्रु के पोत रत्न के पिटारों का अपहरण करने के लिए उसके पोत पर नृत्य करती है। उसके बाद वह गंगा में कूदकर उसे तैरकर पार कर लेती है। इसके अहोरात्र के तदनन्तर वह एक पुत्र को जन्म देती है। अरूण जयन्ती से कहता है:-''मोहिनी और भवानी वे दोनों एक साथ ही हैं, कुमारी ! आप केवल मोहिनी हैं।''[8]

२-अतिमानवीय नारी पात्र:-

उलूपी को अतिमानवीय इसीलिए माना गया है, क्योंकि मानवोचित निर्बलताओं का चित्रण उसके चरित्र में दृष्टिगत नहीं होता है। वह नागराज की दुहिता तथा अर्जुन की भामिनी है। अर्जुन चित्रांगदा के सुपुत्र में स्वाभिमान जाग्रत करने के लिए जब उसे युद्ध के लिये ललकारते हैं, तो वह वभ्रुवाहन को तात से युद्ध करने के लिए प्रेरित करती है। वीर परिणीता के उपरान्त वीरमातृत्व होने का गौरव प्राप्त करने की आकांक्षा उसमें हैं। नाग तनुजा होने के कारण उसके पास संजीवनी मणि भी है, जिससे वह मृत है। उसका हृदय नारी की भाँति कोमल नहीं हैं। पिता पुत्र का युद्ध दृष्टिगत करने का साहस उसमें है।

चित्रांगदा की जन्मभूमि की रक्षार्थ वह कोंच से कहती है कि ''क्षत्रिय धर्म केवल नर के लिए नहीं, नारी के लिए भी है। अत: उसके वाण परन्तप पर चलेगें।''[9]

3-पीड़ित नारी पात्र-वासन्ती (गरूड़ध्वज):-सुप्रसिद्ध गरूड़ध्वज नाटक में नाटककार ने वनिता की वदना और करुणा को अभिव्यक्ति प्रदान की है। नारी जीवन की विवशता और विसंगतियों का चित्रण वासन्ती के जीवन में दृष्टिगत होता है। समाज द्वारा प्रताड़ित और पददलित नारी हृदय की यंत्रणा व जीवन समस्याओं को लक्ष्मीनारायण मिश्र जी ने वासन्ती के माध्यम से प्रस्तुत किया है। वासन्ती बौद्धधर्मानुयायी काशीराज की दुहिता है। काशीराज बौद्ध व ब्राह्मणों के बढ़ते संघर्ष को देखकर इस आशंका में हैं कि कोई राजकुमार उनकी सुपुत्री से विवाह नहीं करेगा।

''द्रौपदी'' (चक्रव्यूह):-लक्ष्मीनारायण मिश्र जी ने 'चक्रव्यूह' नामक पौराणिक नाटक की नारी पात्र द्रौपदी को भारतीय मान्यताओं तथा महाभारत ग्रन्थ के विपरीत अपनी कल्पना के आधार पर प्रस्तुत किया है। सम्पूर्ण नाटक में द्रौपदी को हम व्यंग्य वाणों से आहत और चारों ओर निन्दा से घिरा पाते हैं। पाँच पाण्डु-पुत्रों की यह सधवा, पुत्र तथा स्वामियों द्वारा प्रताड़ित की जाती है। सब द्रौपदी को महाभारत का कारण मानते हैं। द्रौपदी की पीड़ा को समझने वाला कोई नहीं है। उसके उद्गारों का उपहास उड़ाया जाता है। लक्ष्मीनारायण मिश्र जी की धारणा है कि इन्द्रप्रस्थ के सभा भवन में दुर्योधन का अपमान द्रौपदी द्वारा किये जाने पर ही महाभारत का युद्ध हुआ।

लक्ष्मीनारायण मिश्र जी ने महाभारत ग्रन्थ के विपरीत उसे नि:सन्तान माना है। सम्भवत: वे 'अपराजित' तथा 'चक्रव्यूह', दोनों ही नाटकों में द्रौपदी के प्रति कठोर से हो गये हैं। पांचाली के प्रति इन नाटकों में लगाये गये आरोप भारतीय मान्यता और विश्वास को ठेस पहुँचाते हैं। सुत और पति की भर्त्सना नारी हृदय को विदीर्ण कर देती है। लक्ष्मीनारायण मिश्र जी की विचारधारा द्रौपदी के चरित्र-चित्रण में अप्रशसंनीय ही कही जायेगी। नारी भावना के साथ उन्होंने द्रौपदी के चरित्र के प्रति अन्याय ही किया है। द्रौपदी अभिमन्यु को चक्रव्यूह में जाने से रोकती है क्योंकि भामिनी के पुत्र के प्रति भी उसका मातृहृदय ममता, वात्सल्य से परिपूर्ण है, लेकिन अभिमन्यु उसकी भर्त्सना करता है:- ''भूल न जाओ, तुमने कहा था। अन्धे का पुत्र अन्धा होता है, घर आये अतिथि के प्रति ये तुम्हारे ही शब्द थे। चक्रव्यूह की रचना उसी दिन हो गयी माता।''[10]

४-स्वाभिमानी नारी पात्र:-

'मलयवती''(गरूड़ध्वज):-स्वाभिमान मनुष्य का स्वाभाविक गुण हैं। मनुष्य के व्यक्तित्व में स्वाभिमान गुण विशिष्टता प्रदान करता है। ''गरूड़ध्वज'' में नाटककार ने मलयवती के चरित्र में इस गुण का समावेश किया है। मलयवती में महलों के राजकुमारी जैसी गरिमा विद्यमान है। वह मलयपुर की पाण्ड्य की दुहिता है, जो विदिशा के शुंग सेनापति के पास गायन, वादन, चित्र, अनुशासन तथा ललित कलाओं की शिक्षा लेने आयी है। मलयवती में आत्मसम्मान के अतिरिक्त क्षमा, दया, उदारता, करूणा, प्रेम, दूसरों की वेदना को अनुभव करने वाली, दूसरों के दु:खदर्द को बाँटने की भावना भी है। मलयवती कुमार विषमशील से प्यार करती है, किन्तु

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research

Half Yearly

Vol-3, Issue-2
15 Jul-2012

लक्ष्मीनारायण मिश्र के नाटकों के नारी पात्र एवं उनकी विशेषताएँ

– डॉ.देविन्द्रा कुमारी
*हिन्दी विभाग, राजेन्द्र प्रसाद (पी.जी.) कॉलेज, मीरगंज, बरेली (उ.प्र.)

www.shodh.net

Web Portal of Humanity & Social Science Research

उसमें आत्मसम्मान की भावना है, इसीलिए वह विषमशील को दान के रूप में नहीं, वरन् अपनी प्रम तपस्या के बल पर प्राप्त करना चाहती है।

मलयवती वासन्ती से कहती हैं:-''यदि वह मेरे प्राप्य होगें तो किसी दिन ऐसे आ जायेगें जैसे जन्म-जन्मान्तर के वे मेरे ही हो। जान लो किसी के दान के रूप में उन्हें स्वीकार न करूँगी। चाहे स्वयं सेनापति विक्रमामित्र ही उनका दान क्यों न करें। ..... तब मुझे अपने में विश्वास है। मैं उन्हें अपनी तपस्या से खीचूँगीं .....निर्विकार शंकर प्राप्त न होगें ?''[11]

तपस्विनी की तपस्या भी सफल होती है। मलयवती दूसरों के दु:ख में शामिल होती है, इसी कारण वह पीड़ित वासन्ती की वेदना दूर करने का प्रयास करती है। उस पर कलंक लगाने वाले की आँख फोड़ने और जीभ काटने का भी वह साहस करती है।

'प्रभावती'(सरयू की धार):-कुश स्थली के नृप प्रसेनजित की पुत्री प्रभावती अत्यन्त रूपवान, षोडशी तथा सुशीला है। वह 'सरयू की धार' नाटक की नायिका है। उसमें सौन्दर्य के साथ-साथ उच्चकुल का स्वाभिमान भी है। वह श्रीराम के वंश में उत्पन्न हुई है। रघुवंश की इस युवती के सौन्दर्य का वर्णन श्रेष्ठि मणिभद्र के मुख से श्रवण कर, अधेड़ आयु का, साँवला नाग-क्षत्रिय कलिंग नरेश कर्दम उसे प्राप्त करने की लालसा करता है। उसके पिता वृद्ध होने के कारण कलिंग नरेश के समक्ष शक्तिहीन हैं। प्रभावती राजकुमारी अपनी रक्षार्थ काशी के राजकुमार परन्तप को पत्र लिखकर बुलाती हैं। प्रभावती का सौभाग्य यह है कि उसकी सखी अरूणा कर्दम के लिए बनवाये गये उसके चित्रों को अपने चित्रों से बदल देती है। फिर भी प्रभावती के मन में भय है कि कहीं भेद खुलने पर कलिंग नरेश उसका अहित न कर बैठे। वह कहती है:-''जिस कुल की वधू को रावण न पचा सका, उसी कुल की पुत्री को यह नाग क्या पचा लेगा।''[12]

५-युद्ध में पारंगत नारी पात्र:-

''माया'' (अशोक)-अशोक नाटक में माया का चरित्र वीरांगना साहसी तथा देश से प्रेम करने वाली नारी के रूप में प्रतिनिधित्व करता है। वह कलिंग के नरेश की दुहिता तथा जयन्त की भगिनी है। पिता ने माया को जयन्त के पास उसकी सहायता के लिए छोड़ दिया है। अपने भ्राता को समर की तैयारी में अधिक श्रम के कारण दुर्बल होते देखकर चिन्तित होती है। वह विचार करती है कि यदि वह पुरुष के रूप में जन्मती, तो अनुज का सहयोग समर में करती। फिर भी नारी होकर पुरुष वेश में ही घात के कारण जब कलिंग सेना पराजित हो जाती है, तो माया दुर्गा की भाँति रणक्षेत्र में पहुँचकर शत्रुओं को परास्त कर विजयी हो जाती है। उसकी वीरता से एण्टीपेंटर भी प्रभावित होता है, लेकिन पुरुष की वेशभूषा के कारण कोई उसे पहचान नहीं सका। उसमें स्वाभिमान का गुण भी विद्यमान है। अशोक की बन्दी होकर भी वह उससे ''दया की भीख माँगने को तैयार नहीं है।''[13]

बन्दी गृह में निवास करते हुए वह अपनी वास्तविकता को छिपाये रखने का प्रयत्न करती है, किन्तु पिता सर्वदत्त से मिलने पर अपनी भावनाओं को नियन्त्रित नहीं रख पाती है। रहस्य खुल जाने पर पिता की आज्ञा से वह अपने वास्तविक वेश में आती है। अन्त में उसका परिणय राजकुमार अरूण के साथ होता है। इस प्रकार इस नारी में हमें देश-प्रेम के प्रति भक्ति-भावना, वीरता, साहस, स्वाभिमान तथा प्रेम आदि विशेषतायें दृष्टिगोचर होती हैं।

६-एकनिष्ठ प्रेमिकायें:-

''डायना'' (अशोक):-ग्रीक राजकुमारी डायना प्रेम एवं भावुकता की साक्षात् मूर्ति है। वह प्रेम की अनन्य उपासिका नाटक की एक करुण सृष्टि के रूप में सामने आती है। वह अपने युवा शिक्षक ऐंटीपेंटर से प्रेम करती है। लेकिन वह स्वयं को राजकुमारी के योग्य नहीं समझता है, क्योंकि वह निर्धन है और डायना राजकुमारी। ऊँच-नीच, धनी-निर्धन तथा जाति-पाति की संकीर्ण भावनायें सदैव ही प्रेम के मार्ग में बाधाएँ बनी है। यही बाधायें डायना के जीवन में भी चिर विरह उत्पन्न करती है। डायना के पिता उसका विवाह मैडिसन के राजकुमार से करना चाहते हैं, लेकिन डायना को ऐश्वर्य और वैभव की कोई जिज्ञासा नही है, वह तो निर्धन

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research

Half Yearly

Vol-3, Issue-2
15 Jul-2012

लक्ष्मीनारायण मिश्र के नाटकों के नारी पात्र एवं उनकी विशेषताएँ

– डॉ.देविन्द्रा कुमारी
*हिन्दी विभाग, राजेन्द्र प्रसाद (पी.जी.) कॉलेज, मीरगंज, बरेली (उ.प्र.)

www.shodh.net

Web Portal of Humanity & Social Science Research

ऐंटीपेंटर से समर्पणमय, एकनिष्ठ प्रेम करती है। उसके इस समर्पित प्रेम से ऐंटीपेंटर भी आत्मविस्मृत हो जाता है। डायना के पिता उसके प्रेमालाप को सुनकर क्रोधावेश में एण्टीपेंटर को प्राणदण्ड देने की घोषणा करते हैं, लेकिन डायना अपनी प्रेम स्वीकृति देकर अपना अपराध भी स्वीकार करती है। तव ऐंटीपेंटर को देश-निर्वासन का दण्ड मिलता है। ऐण्टीपेंटर के दूर चले जाने पर भी डायना उसके ही प्रेम में तल्लीन रहती है। वह मैडिसन के राजकुमार से विवाह करना अस्वीकृत कर देती है और पिता से स्पष्ट कहती है कि:-''मैं ऐण्टीपेंटर को प्यार करती थी और अब भी उसे चाहती हूँ। इस संसार में मेरा जो कुछ स्वर्ग है। वह ऐण्टीपेंटर के चरणों में है।''[14]

७-कर्त्तव्य-परायण एवं त्याग तपोमयी नारी पात्र:-

नारियों में कर्त्तव्य के प्रति सजगता, त्याग की भावना, प्रेम की प्रतिमूर्ति, विनयशीलता आदि भावनाएँ होती हैं।''संन्यासी'' नाटक में मालती, किरणमयी,''मुक्ति का रहस्य'' नाटक में आशादेवी, ''सिन्दूर की होली'' नाटक में चन्द्रकला, मनोरमा आदि नारियों में कर्त्तव्य-परायणता, त्याग,तपस्या आदि भावनाएँ दृष्टिगोचर होती हैं।

८-मदनदेव से पीड़ित नारी:-

लक्ष्मीनारायण मिश्र जी के प्रथम नाटक अशोक में अशोक की परिणीता देवी यौवन सम्पन्न और वासनामयी नारी के रूप में चित्रित किया गया है। सम्राट अशोक संग्राम के कार्यो में अत्यधिक व्यस्त रहने के कारण अपनी वामांगिनी की ओर ध्यान नहीं दे पाता है। देवी को अशोक की संग्राम प्रवृत्ति पसन्द नहीं है, वह उससे पूछती है:-''फिर वही युद्ध? प्रियतम युद्ध छोड़कर, तुम्हारे लिये कुछ है ही नहीं?''[15]

९-सती नारियाँ:-

लक्ष्मीनारायण मिश्र जी के नाटकों में सती नारियाँ का स्वरूप कम है, फिर भी ''अपराजित'' की जयन्ती के चरित्रों में पति के साथ सती हो जाने की भावना समाहित है। इसीलिए इन्हें सती नारियों के वर्ग में रखा गया है। यद्यपि यह नाटकों की प्रमुख नारी पात्र नहीं हैं।

''भानुमति''(अपराजित):-भानुमति सुयोधन की प्राणेश्वरी है, जो एक कर्त्तव्यपरायण एवं हृदयेश्वर परायणा नारी है। धैर्यवती की प्रतिमा है वह। अपने प्राणेश की मृत्यु पर्यन्त भी उसका दु:ख अश्रु के रूप में इसीलिए बराबर नहीं निकला कि कहीं नारी रूदन को श्रवणकर कौरवपक्ष के वीरों को धैर्य विलुप्त न हो जाये और वे दुश्मन के उपहास का केन्द्र-बिन्दु बन जायें। धर्मपरायण भानुमति ने कोमलांगी नारी हृदय को बज्र से भी कठोर कर लिया। स्वामी की मृत्यु ने भानुमती के हृदय को विदीर्ण कर दिया। द्रौपदी की ओर से वनिता बनने का सन्देश श्रवणकर कालनेमि नागिन की भाँति बरस उठी और अपने पतिव्रता होने का प्रमाण प्राणेश्वर के साथ सती होने का प्रण किया।

१०-स्वच्छन्द तथा विलासिनो नारियाँ-

''अम्बपाली''(वैशाली में बसन्त):-''अम्बपाली''इतिहास प्रसिद्ध नगर वधू है जिसका नूतन रूप इस नाटक में दृष्टिगत होता है। अलौकिक सौन्दर्य की प्रतिमूर्ति, वैशाली की नगर वधू होकर गौरवपूर्ण जीवन व्यतीत कर वह सभी को अपने मनोमुग्धकारी सम्मोहन में रखती थो। रूप सौन्दर्य ने उन्हें झुकाने का प्रयत्न किया।

वसन्तोत्सव में हिस्सा लेकर भावी पीढ़ी के लिए अभिषेक पुष्यकरणी पर गीत गाने की घोषणा करके अपने मुखारविन्दु से कहती है:-''भिक्षुणी अम्बपाली के कण्ठ से बसन्त का राग एक बार फिर निकलेगा। भावी पीढ़ी के लिए वशाली में वसन्त की गूँज दिशाओं में फिर भरेगी।''[16]

११-बौद्ध-भिक्षुणी नारियाँ:-

बौद्ध धर्म में दीक्षित नारियाँ ही बौद्ध भिक्षुणी कहलाती हैं। जो अपने जीवन का निर्वाह भिक्षा से करती हैं। इसमें इतिहास प्रसिद्ध नारी पात्र होते हैं। अलौकिक सौन्दर्य, रूप गर्विता, सम्मोहन, मनोभाव, भोग-वैराग्य की भावना आदि तत्वों का चित्रांकन किया है। ''वैशाली में वसन्त'' नामक नाटक की नारी पात्र अम्बपाली में सौन्दर्य, मनोभाव, वैराग्य की भावना आदि विशेषताएँ विद्यमान हैं।

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research

Half Yearly

Vol-3, Issue-2
15 Jul-2012

लक्ष्मीनारायण मिश्र के नाटकों के नारी पात्र एवं उनकी विशेषताएँ

- डॉ.देविन्द्रा कुमारी
*हिन्दी विभाग, राजेन्द्र प्रसाद (पी.जी.) कॉलेज, मीरगंज, बरेली (उ.प्र.)

www.shodh.net

Web Portal of Humanity & Social Science Research

१२-अन्य प्रमुख और गौण नारी पात्रः-

मंजरी कण्ठजन के क्षत्रिय राजा भद्रसेन की दुहिता है। उसमें मनोहारी सौन्दर्य के साथ अद्भुत ज्ञानविवेक की शक्ति है, जिसके कारण वह यवन क्षत्रप फिलिप तथा सेनापति निपर करन को अपने रूप जाल में फँसाकर दोनों को नष्ट करने में सामर्थ्यशाली होती है, किन्तु उसके साथ अष्ट दिवस तक धूप छाया की भाँति निवास करने पर भी उसके प्रेम को प्राप्त नहीं कर पाती है, क्योंकि वह अनुराधा से प्यार करता था। चन्द्रगुप्त के अनुसार वह तिलोत्तमा जैसी राक्षसी मन्त्री के अनुसार वह स्वर्ग से उतरी रम्भा जैसी या संहारिणी भवानी जैसी है। यह स्वरूप लक्ष्मी जब चन्द्रगुप्त की माता द्वारा नन्दपुत्र सुमाल्य की हृदयेश्वरि बना दी गयी, तो उसका हृदय छटपटा गया, क्योंकि उसका हृदय तो चन्द्रगुप्त में तल्लीन था, परन्तु फिर भी इसे स्वत:भाग्य मानकर वह सुमाल्य को ही प्राणेश रूप में स्वीकार करती है और सुमाल्य की मंजरी हो जाती है। विष्णुगुप्त के अनुसार ''वह अभिनय की सरस्वती है।''नृत्यकला में निपुण है, किन्तु अनुराधा के प्रति उसमें क्षणिक ईर्ष्या का भाव है, क्योंकि उसके कारण ही चन्द्रगुप्त उसे नहीं मिला। अत: यवन बाला हेममाला जब चन्द्रगुप्त की प्रेमिका बन गयी, तब वह बहुत ही खुश हुई कि यवन बाला अनुराधा की सौत बन गयी। इस सुख में वह नृत्य करने लगी। मन के राज्य को पृथ्वी से बड़ा मानती है।

''लक्ष्मीनारायण मिश्र'' के नाटकों पर दृष्टिपात करने पर 'धरती का हृदय' नामक नाटक में भीष्मव्रत धारण करने के सम्बन्ध में विचार ध्यातव्य हैं:-'चन्द्रगुप्त भी उससे प्रभावित है, क्योंकि देश की एकता में सहयोग देकर उसने यश प्राप्त किया। अत: वह उसके वक्तव्य पर अनुराधा से विवाह न करके भीष्मव्रत धारण करने को तैयार है।'[17]

निष्कर्षः-निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि लक्ष्मीनारायण मिश्र जी ने ऐतिहासिक सांस्कृतिक तथा पौराणिक नाटकों में मुख्य नारी पात्रों को आदर्शवादिनी भामिनी, अनन्य प्रेमानुरागिनी, साधिकाओं, स्वकीया नायिकाओं तथा वात्सल्यमयी मातृत्व के रूप में अंकित किया है। अधिकाशत: नारियाँ अद्वितीय मनोहर रूप की स्वामिनी हैं। वे भारतीय गुणों की प्रतिमूर्ति हैं एवं मनुष्य की प्रेरणादायिनी शक्ति हैं। त्यागमयी, धर्मपरायण, कर्त्तव्य भावना से ओत-प्रोत, उदारमयी, स्वाभिमानी रक्षक आदि उनके विशिष्ट सद्गुण हैं। वस्तुत: नारी चित्रण के विभिन्न स्वरूप तथा गुण उनके नाटकों में दृष्टिगोचर होते हैं।

सन्दर्भः-

1- ''लक्ष्मीनारायण मिश्र के नाटकों में नारी पात्र''-''डा. जगदीश त्यागी'', पृष्ठ-संख्या-132, कुमार प्रकाशन, 20/30 मोतीनगर, नई-दिल्ली-15, प्रथम-संस्करण 1979
2- 2 से 4 तक ये नारी पात्र वामांगी के रूप में चित्रित किये गये हैं।
3- 1 व 2 नारी पात्र भामिनी के रूप में चित्रित किये गये हैं।
4- वासवदत्ता दुहिता तथा मातृत्व के रूप में भी दृष्टिगत हुए हैं।
5- कृपा माँ के रूप में चित्रित है।
6- चम्पक माला मातृत्व के रूप प्रयुक्त हुई है।
7- माया-दुहिता के रूप में चित्रित हुई है।
8- ''वैशाली में वसन्त''-''लक्ष्मीनारायण मिश्र'',पृष्ठ-संख्या-74 विद्या खंजाची रोड,पटना-4,
9- ''अश्वमेध''-''लक्ष्मीनारायण मिश्र'',पृष्ठ-संख्या-32,मेहरा प्रकाशन,हास्पिटल रोड,आगरा
10- ''चक्रव्यूह''-''लक्ष्मीनारायण मिश्र'', कौशाम्बी प्रकाशन, पृष्ठ-संख्या-26
11- ''गरूड़ध्वज''-''लक्ष्मीनारायण मिश्र'', लक्ष्मीनारायण एण्ड संस आगरा,साहित्य भवन (प्र.लि.), इलाहाबाद-3,सं.1987, पृष्ठ-संख्या-38
12- ''सरयू की धार''-''लक्ष्मीनारायण मिश्र'',साहित्य भवन (प्रा. लि.) के. पी. कक्कड़ रोड़, दारागंज, इलाहाबाद-6
13- ''अशोक''-''लक्ष्मीनारायण मिश्र'', हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, पृष्ठ-संख्या-134, वाराणसी
14- वही, पृष्ठ संख्या-46
15- वही पृष्ठ संख्या-67
16- ''वैशाली मं बसन्त''-''लक्ष्मीनारायण मिश्र'',विद्याभवन,खंजाची रोड़,पटना-4
17- ''धरती का हृदय''-'लक्ष्मीनारायण मिश्र', विद्याभवन, खजांची रोड़,पटना-4, पृष्ठ-संख्या-111